मिलता रहा है. सा हित्य और कलाओं को अपनी अलग माध्यम है। कविता संगीत नहीं हो सभी अपने समय को, उसमे वस्तार और द्रीष्ट को ममझने-रचने कोई प्रमाण नहीं है कि पीपल का पेड अन्तिमधरता का रत्याच्यान नही है। माहित्य हो या अन्य है। होना भी नहीं बाहते। इसका कता पक्षी होना बाहता होगा। फिर भी यह होता है. चित्र में लय देखी-खोजी जाती है। रामम में तो बहुत मने कप में अनेक हलाओं का ममावेश होता है। स्वतंत्रता उसके दुखनाम सकती. जैसे कि रंग शब्द नहीं हो सकते मच है कि कविता के स्थापत्य का जिड़े और संगीत में कई रुगते नजर आती है- मबके अलग या विडम्बना. की नियमि अन्तस्माचन्य या स्वतत्र सता

भारत भवन के शब्दार्थ

लोक मंगीत अध्यास-दिहासीय के लिए एक कवा बागर्य-मारतीय कविता पुस्तकालय मध्यप्रवेश रंगमंडल-एक रिपर्टरी डपकर-समित कला संप्रहासय रीया-हपकर की कलाबीपिका आकार-समित कला कर्मशामा बहिरंग-एक बादी रंगगाना अन्तरंग-एक बंद रंगशाला नेपाय-वी वीत हम अनहब-शास्त्रीय

त्रासदी

म्लाए. Hall है. बैसा ही जातिभेद रसिको और महुदयों में हो गया है। मबके रिमक

यह है कि कवियों को संगीतका ों में कुछ मतलब नहीं, चित्रकार नहीं आनते कि ाय में स्या हो रहा है, मर्ने क कमी कविता मही पढते और संगीतकार नहीं नानते कि रामच में इन दिनों क्या हो है। हमारी अपनी परकारत के बरुद्ध और स्वय पश्चिम में आंश निकता प्रेरित. एक ऐसा बाताबर ण बन गया है, जिसे कलाओं की मार्डकृतिक रक्षरता का परिवेश कहा जा भाकता जैसा अष्ट्रतपन कलाओं में आभास में आधुनकता के इस दौर में। प्राचीनों में त्मारी जिन्दगी की सचाई में कोई मार्थक सम्बन्ध बचा ही नहीं। नतीजा इस तरह के सम्बाद की गा पद अधिक भी। औपनिवेशिक मानसि हता और अधकचरे मध्यवर्ग के विकास ने उस परध्यरा की संडित किया या एक ऐसे मनही रूप जीवत रहा. लेकिन जिसका सस्करण है-मुजन की अनेक बहुवणी परिणतिया। बावजूद इसके अक्सर ऐसा होता रहा है कि एक-दूसरे! से प्रतिकृत हच्छा थी और एक बड़ी सम् द्व परम्परा मनर पर उतार दिया, जहाँ एक बहुत का यत्न करती है। अन्ततः सभी रचना या पडोस में होने का अवसर बहुत ममावेशी हप जिया. 東田

अस्पृष्यता और निरक्षरता के विकड एक अभियान चन रहा है। विश्विष मध्यप्रदेश में पिछले कुछ क्यों है।' इस

आश्य-अपिषि कलाकारों के जिए आवास

जर की जिक्रामा बादे कियां

गितिथ कलाकार के लिए एक आवास है, जिसमें वर्ष भर में देश या प्रदेश से भारत भवन में प्रमुख रूप से एक र्णकालीन रंगमंडली, भारतीय कविता त्मके अतिरिक्त योजना यह भी है कि ग एक पुस्तकालय और शास्त्रीय और एक शीर्ष स्थानीय नीक संगीत का एक संग्रहालय होगा। एक कलाकार, एक मगीतकार और एक रंगकर्मी आकर इस दिनों के लिए यहाँ रहेगा। बह बाहे वर्कणांप आदि आयोजित कर सकता है। चुपचाप अपनी साधना जारी रख मकता है। उसके यहाँ होने का लाभ उठाते हुए भारत भवन उस पर एक पूरा विस्तृत दस्तावेज तैयार कर सकेगा औ धीरे-धीरे इसका भी एक संग्रह विकसित रीता जाएगा। प्रदेश की युवा प्रतिभा का कसी श्रेष्ट मुजनात्मकता से धनिष्ट तर आत्मीय संबंध बन सके, निए भी यह एक अवसर कम माहित्यकार.

ाई। बस्तुस्थिति इससे काफी अलग है। अवधारणाएँ प्रचलित रही है, उम पर निविचार जरूरी हो गया है। गहर में रहने वाले व्यक्ति समकालीन है, लेकिन गाँवों या अंगल में रहने बाले नहीं, यह धारणा पछले दिनों बिना जाँचे-परखे मान ली और कलाओं अभी समकालीनता

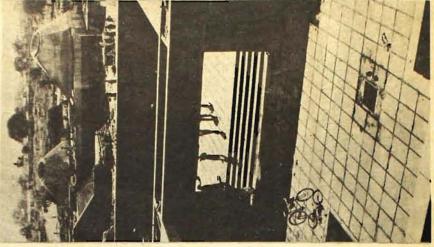
परिशाब्द

१३ फरवरी १९८२

अभिजात के बीच, णहर और गांव के बीच जो दूरी है, उसे भी किसी हद तक मलाकृतियाँ भी संप्रहित की गई है। 'रंग प्रयत्न भी उसकी जिन्ता का एक आवश्यक अंग होगा। अनहद' में सिर्फ अलगाव को एक अर्थपूर्ण और मडल न केबल नए आधुनिक नाटक बेलेगा, बल्कि मध्यप्रदेश की लोक णास्त्रीय संगीत ही नहीं, बल्कि लोक संगीत भी संग्रहित होगा। दूसरे गब्दों में जिस तरह भारत भवन कलाओं के बीच ममुद्धिकारी मान्निध्य में बदलना चाह रहा है, उसी तरह वह लोक और पुनराविष्कार प्रयत्न भी उसकी बिन्ता का पाटने की क्रीश्रम करेगा। नाट्य गीलयों के

भारत भवन का उद्घाटन निरी इमारत का उद्घाटन नहीं है। वह उन सब गतिविधियों का भी गुभारभ है, जो अन्ततः वहाँ उसकी आवश्यक चर्या का अंग होंगी। इस बात को भी अलक्ष्य नहीं

शाम प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी भोपाल में मध्यप्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी भारत-भवन योजना का विधिवत् उद्घाटन करेंगी। इस तरह देश के सांस्कृतिक इतिहास में एक नया अध्याय गुरू आज होसा





# कला, साहित्य, संगीत, नाटक सब साथ

अशोक वाजवेयी

पड़ोस में हैं, परस्पर प्रतिकृत होते हुए। यह स्थान समकातीन अभिव्यक्ति, अन्वेषण, विचार और नवाचार के लिए है। यह उनके लिए रचनात्मक और प्रेरक परिवेश हैं जो लिलत कला, रंगमंच, कविता और संगीत के आज के परिदृश्य में कुछ नया और सार्थक, साहसिक और स्वन्दर्शी, उत्तेजक और अन्तर्दृष्टिपूर्ण करना चाहते हैं। देश में, फिर बाहे नगरों में, ग्रामों में या बनों में जो उत्कृष्ट और स्थायी महत्व का रचा जा रहा है, उसका कुछ हिस्सा संघर्ष और पीड़ा, गहराइयाँ और सपने पहुँचा सकने की आशा करता है। यह नयी मुजनात्मकता, परम्परा और भारत भवन ललित और प्रदर्शनकारी कलाओं और साहित्य का समागम है: यहाँ वे एक-दूसरे के पास-यहाँ संग्रहीत है। जो उससे प्रतिकृत होने को तैयार हैं, भारत भवन उन तक समकालीन कलाकारों की महिमा क्लासिक्स की खोज और एक नए सांस्कृतिक उन्मेष में व्यापक हिस्सेदारी का केंद्र है।

पह तो ठीक है कि बीसबी मदी में रहने ना अर्थ एक बीकन्ने, सक्रिय और तेज डम समय से कोई अर्थपूर्ण संबंध बनाना हैं में बृह अबोधपन या सरल-दिमागी से मिष नहीं है। लेकिन हम सिर्फ इतिहास र मिया में तही रहते। हम उस ममय में भी छते हैं जो इतिहास की जिल्ता किए अधिक समावेशी धारणा प्रस्तुत की जा मम्प में रहना है और आहर है अगर किंगा हमारे जीवन की अपनी गति और म हमारे लिए उपलब्ध कराते है भारत भवन में समकातीनता की अत्ततः धीरे-धीरे आयोजन के ममाप्त होने पर फिर ध्रमिल हो जाती है। भारत गहरी और प्रभावकारी क्यों न हो. भवन इसे अधिक स्थायी हप देने का स्यत्न है। यह ऐसा केन्द्र होगा. जहां ग्गीत एकत्र होंगे। यो तो देश में अनेक ति है, पर मायद यह अपने हम का हिला होगा. जहां इतनी कलाएँ और माहित्य एक माथ होगे। चूँकि एक दूसरे के पड़ोस में होंगे. इमलिए यह उम्मीद हरती चाहिए कि उनके बीच अनेह नए गम्बन्धः अनेक ममृद्धकारी तनात तिलत कलाएँ कविता, ग्गमच साहित्य और कलाओं का द्वैमासिक आदि के मध्यम में विकार-विनिमय और आस्वादन दोनो ही धरातलो पर समकालीन मुजन का प्रा ज्यपट साक्षात हो और कलाकमियो तीर रसिको दोनो ही बनों के पोड़ी देर के लिए ही मही एक-दूसरे के निकट आने का अवसर बन सके, इसकी चेच्टा होती रही है। मध्यप्रदेश कला परिषद् जैमी मन्या के संगठनात्मक द्वि में ही इस तरह प्रदर्शनकारी और स्पक्त कलाओ अवग्यम्भावी है। किसी एक आयोजन म का माधिक्य अन्तिमिहत

और सक्रिय हिस्सेदारी है। मध्यप्रदेश उसके अन्तर्गत साहित्य और कला मासन ने जो नीति निर्णय कर रखा है. संबधी सभी आवश्यक निर्णय और उन गर अमल विशेषुत्रों और कलाकारों के कलाकारों की या तो किच नहीं होती या हाथों में है। इस अर्थ में भारत भवन एक अद्वितीय प्रयोग है। अस्तर यह होता गति नही। भारत भवन इसका अपवाद है, स्योंकि उसमें जो कुछ होने जा रहा। संगठनात्मक ही है। क्षकर के निजत कना सपह

और प्रदेश के कलाकारों की बहुत गहरी

क्या जा मकता कि भारत भवत में देश

# रूपकर: क्या, केंस

इन क्लाकारों ने आरभ के एस

न आकृति के जाने न उसके मीटने में मतलब रहा है। हमारी चिता का सबा पक्र की उद्यादन प्रदर्शनी भारत में ममसामधिक कला की एक ब्यापक प्रस्तित है। सममामधिकता में पहाँ काई अवागाद होने का दावा नहीं

ना इस बात से है कि कला में आकृति रह आत्मा को गाति है। यह बोले कि भारतीय मदर्भ में सममामियक मेतना प्रकट होने या न होने का दम क्या है जब शक्त में अयेजों ने भारतीय धराहर में कोई दम नहीं देखा तो उन्होंने एक राजा रवि बमां को हम पर थीप नगी तो एक हेबल हम यह बताने मग और इस तरह उन्होंने हम पर बेतुकी बगमा स्कल ग्रैली को जाद दिया। ममय बदला और आर्चर (भगवान उसकी दिया। अब उनकी आत्मा उन्हें कचोटने हेवल उनकलाकारों के द्वारा आई है उपलिख्यमें को आत्मस्त कर लिया। यूचर औसे बर दिमाग ने हमारे बीच क अजन्ता की कला में बहुत जान जगत अन्द्रीने में इस प्रकार हमने ऐसी कृतियों की किया जा रहा, बरन उमे गारिटक, अधी में लिया जा रहा है. जा हमारे लिए यह मभव बनाता है कि हम अपने मजाकार के अधीन हम ऐतिहासिकता के बोझ में मुक्त हो जाते है और मुजनात्मकता के गोतों के निकट पहुँचने है। इस प्रदर्शनी म्टाया है. जो सामान्य रूप में आधुनिक मानी जातो है और वे जो लोक और आदिवासी कही जाती है। मेरा ऐसा कि ममान के प्राविधिक वकाम के माथ कमा में उसी सरह का अथवा ग्रामीण मद्दर्भ में काम कर रहे हो णक माथ पेग कर मह। इस द्रिक्रिकोण की क्रियों की बाहे वे नागर क्षेत्री

तन्त्र के कीटाणुओं की फैलाना बाहा और अब भी हाचिकित्स और उनके बध बाधव हमें फिर गास्ता दिखाने पर

तीर नेयब महता की देन इस द्रिट मे लेकिन मामाज्यी रिश्ता हमारे कब काम आ पाया है और ऐसे में कैसे आ पागमा. जबकि मदर्भ क्षेत्र में स्वय अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं रहा है। जब भारतीय हत्ताकार योग्य के महाद्वीपीय परिवेश पे कताकार इस बात की ममझ गए कि कता के मेद्रातिक पचड़ा में पड़ना बेकार और आत्माभिव्यक्ति और आत्म मैन अक्षत्र, रामकृमार, कृष्ण बन्ना म मपन में आए, तभी देश के नाम हला आदालन में कुछ घटिन होने लगा मन्यन परम आवश्यक है। मजा, रजा का योगदान कुछ महत्त्वपूर्ण है और महमी।

आकृति

अभिव्यक्तिबादी आकृतियाँ अब मानो गई है और किसी अनहोंनी के इतजार में है। इस कलाकारों ने कभी अवागाई का

रेषामलक हो गई है। उनकी पहले की एक भयानक चयी की अकड़ में म्यिर हो

त्री पान्परिक भारतीय शैलियो और गाण्यात्य आदालन की शैलियों की पका कर एक आधुनिक भारतीय कला का जन्म देना चाह गहे थे। वैमे स्वय इनकी अभिव्यक्ति में काफी फर्क आया है। गमक्रमार हत्ताकारों की बेच्टाओं को ठकरा दिया बहे. बहाँ कृष्ण मन्ना अपने अमर्तन दौर में आकृति की ओर मीटे। निकत यह चत्र मानवता में मराबोर नहीं है या आक्रतिमालक कला में अमर्तन की और प्रतिनिधिम्लक है। जहाँ तैयब पहले बहाँ अब वे दो आयामी मपाट नगों मे काम लेते है और आकृति मक्षिप्त. कित हैं में कहा जा मकता है कि गम के अमूत मिलमिलेबार बापों में निर्मित करते थे की बूग या नाइफ आकृतियाँ HE HE 乍 कालातर म उदाहरणाथ

शयोक्क पाण्यात्य कता के विभिन्न शदान्त्रों के गिकार नहीं बने। इस प्रकार हमेन माहब आज आकृति के पाय एक ऐसी सतीय जनक स्थिति में है. नहां पाछचात्य जगत में आकृतिमूलक हमा को द्वारा में प्रतिष्ठित करने की गरा हो रही है। यह बात अलग है कि हुमैन क्षी कला की स्थाई मार्थकता है और उसका फोटो यथार्थवादियों की नाम नद्रा ऑक्नयार क्या और निरंबाजी में कोई मरोकार नहीं। मुजा और अक्षवर अपनी आकृतिमुलक कला म जितने मौजिक है. उतने ही गायतोड़े भीर अस्वादाम अपने अमृतिन में। में जो गान कहने की चेप्टा कर रहा है वह यह कि हमारे नागर मदर्भ में गंभीर गारतीय कलाकारों ने बस्तवादिता के गन्तर में क्सने की कभी बेटर नही होना गहिए, आकृतिमुलक होता बाहिए कि ता ऐसे सबाल की कला को अपने होना नाहर अथवा अप्रतिनिधि मुलक गहिए या मने प्रतिनिधिमलक अनाकृतिम्लक होना बाहिए. मित्र क्रियार महे हैं और सेक्रार (बाकी पेज ६ पर)

प्रशान्त और विनम्र अभवन यह ऐ तिहासिक नगर, भेषाल की बड़ी आहिस्ता उतरती पहाहियों और किनारे-किनारे दूर तक फैले पठार की रमणीय प्ट भूमि म यह कलाकेन्द्र म्यित है।

झील के नीचे जल तक आहिस्ता-

विकित्र, आगना और छत्ररस्य

माथ-माथ एक दमर में मिले-मेले चित्र

वगीना का आकल्पन किया है और इस नरह हर. समझ आपकी ऑक्स का राष्ट्रम मिल मकती है और आपका मन चिन्तन इसिनए इसका बास्त जिल्प प्रणान्त

> अध्यता भी पर दाक्षिल होकर फैले हुए अगिन के अलग-अनग रूपाकारों में होता हुआ कतार- कतार की मंभावना ने अपना बरामी-बरामाँ चहलकदमी करता हुआ बक्री हर बीज एक-दूसरे मे और घुम गुरू में ही इसकीकल्पना ने स्वय छत, झील तक चली गई बगीचों की हप लेना आरंभ किया। सबसे ऊची छत पर पहुँच सकता है। यहाँ दिखाई देने गाकि उसका समग्र प्रभाव और पुरा अपना एक रूपाकार ग्रहण कर निया था। लगभग तस्त ही मन में छत-दर-कोई भी व्यक्ति इसकी विभिन्न जगहो . लेकिन इसके बाबजूद अपने आप में मुपरिभाषित है फिर कर भी सबद्ध है.

अनीपचारिक और रमणीय मग्रहालय का हो, जो दर्शकों को आहलादित करे। रर-छत, बगीचे बट भी भोपाल क इरअसल, एक प्रपात की मानित्व छत-नागरिकों की स्थानमा आमों के जिए रमणीय सरमाह होंगे और यह कता परिमर अल्द ही गहर के दर्णनीय स्थलो वजाय एक

भारत भवन के वास्त शिल्पकार चाल्से कोरिया के विचार

नाकि यहा होत बानी गनिविधियो

निराकार और नि शब्द-मी उपस्थिति तीर कलाकतियों के जिए एक भात और निविकार संदर्भ प्रदान किया जा सके। आकाम की पनिरेखा पर तीन शक

और विनम्र है। दरअमान यह भवन

निमान हो सकता है।

पचमूच अभवन है। इसकी

इसके बनीबों और आंगनों का एक अधिकाम मग्रहालयों में इतनी निर्ममता से दर्शको का बीजो और जानकारियों में मामना नन्द्रावान एक किस्म के मधहालय क म एक और सार्थक कड़ी हो आएगा। धन्दे का जिकार हो जाना है। इस बचने के जिए हमने यहाँ दीर्याओं होता है कि बड़े में बड़ा और भी मक्तद

फ्रिक्ट, प्रमृत्व स्वरोच्चार की मानिन्ट उत्रर है। द्वत और पूर्व के माने में स्थानिक विभारता है इसम

नगातार आरोह-अवरोह है, जो भीतर प्रदक्षित की जाने बाली प्रत्येक कलाकृति उसके असक्त परिस्थिति और आपक विकिशता प्राप्त हो महती है।

मीत्र प्रकाण्या क्छ

में एम. ए किया। १९६० से बंबई में रगकर्म से संबद्ध। थिएटर यूनिट अफ इामेटिक आर्ट्स से प्रशिक्षित। बिलामपुर में जनमें थे और १०५३ में हि १०५५ में प्राम्पटर की हैमियत में लामंच में जहे। बाद में मागर में अधेजी मन्यदेव देव रग-कम का एक जाना क्रमेट के जिलाड़ी बनने बंबई चने गए हिमाना नाम है। वे १०३७

फिल्मो (अपरिचय के फिल्म आंतता कोर्ट नाटक तो इनके बाते में तीम में अधिक बदेशी नाटकों के अनवाद भी किए है। बालु आहें का निर्देशन भी कर चुके हैं। अधायन, मनो 馬 पयाति, आधे अधुरे आदि। आपने कुछ १९७३ के उत्मव में राजकीय सम्मान है। कुछ बिचत नाटकों के नाम है: विध्याचल और टम इन चीक) जनमेजय, सभोग में मन्यास महाराम बाइडर, अलाबा मराठी को नयु

> इस बार २१-२१ हजार का शिवर ज्यदेव बधेल और मत्यदेव द्वे को दिया मानी हिन्दी गल्प साहित्य में एक प्रस्थात नाम है। मध्य प्रदेश के सुचना ख प्रकाशन विभाग के अलावा भाषा

मृलक्षेर क्षाँ मानी

अत्यधिक

उपस्थित और दिनचया

सम्मात सर्वश्री म्लग्नेर स्रा ग्रानी



१६ मई १९३५ की जगदलपुर मे

मानी ने अब्रुक्तमाइ

HE PE

प्रमुख रचनाएँ हैं, सौप और सीड़ी, फूल तोड़ना मना है, एक लड़की की डायरी, बबून की ख़िह, डाली नहीं फुलती, ख़ोटे घेरे का बिद्रोह, एक से मकानों का नगर, युड, शर्त का क्या हुआ, बिरादरी, मड़क

कहानियों और उपन्यामों में उनकी

समाजशास्त्रीय अध्ययन भी किया है।

मत्यवेष वृषे

जिनका अलंकरण है अन

के जानकियों को उसी तरह तकार इते, जिस तरह समात्र प्राते पड गा

म मानातर विकास नही होता। यदि एमा होता तो हम विगत भी ममन्त

वण्याम ह

ग्राविधिक अनुष्ठानी को स्याग देता है। हमा की महान मुक्तिदायक ग्रांक्त इम त्य में है कि उस पर किसी समय गम्कृति या मध्यता की ठेकदारी नहीं है।

है। मणिदा ने १९५० में आर्य पद्मित से एक पजाबी नडकी म्मीला) में विवाह किया। १९७५ में ा५० के दणक में, जब वे बहोदा में लात निक्तम के कला भवन मे श्यापनरत थे, तभी हस्तकश्या मडल भित्रा को पधनी की उपाधि मिली भी मबद्र हो गए थे। अब वे पन शापनरत है। उत्रीस मी अस्सी का कालिदाम उनका जन्म करल में १९२४ में हआ प्रस्कार जीतने वाले कला गुरु मेकर और बनकर मानते हैं। उनके आरिशक दिनों में ऐसा नहीं लाना था कालपति गणपति मुक्रमध्यन् अपने कि वे कला को समपित हो जाएँगे। और दो दिन बाद १५ फरवरी की म्यरीलस्ट आपको एक पेटर,

म्मताभरी होती है। निर्णय-प्रक्रिया में लाह जीसे ही रची, बगो और कैनवास के ाक्षिय में पहुंचते हैं, लगता है कि उनके ब्रोत उनकी पूर्ण उदासीनता उजागर है। के जी एक पेटर में भी ज्यादा निकी जानकारी विशेषज्ञ स्तर की बस्पी रखते है। वे ज्ञाल्पकला हर पहनते हैं. जिससे आज की फीमन हि। गहन जानी है। म्यूरेल के मामले कला और शिल्य के विकास हैत गवश्यक है। वे काम से जी नहीं च्राते तिमान्य का सार यही है। वे अक्स 5न और प्रशासन के मामलों में भी वे उत्तमकी वे अपने माता-पिता की ८वीं मतान पेटिंग की तरफ उनका झकाब था जरूर, लेकिन प्रसोडेन्सी कालेज मद्रास में वे अर्थशास्त्र के छात्र थे। यह १९४२-४३ की बात है। भारत छोड़ों का जमाना था और स्क्रमण्यन महात्मा जहाँ फास का आधिपत्य था। वहाँ से गाति निकेतन की राह पकड़ी। तब महान कलाकार नदलाल बास जीवित वे। १९४४ से ४८ तक के जी, ने मानि बाद में स्लेड स्कूल आफ आर्टम गाँधी के आदोलन के प्रभाव में आकर विचित कर दिए गए। छुटेता माहे पहुँचे निकेतन के कला भवन में शिक्षा ली। अलीप्रम जेल जा पहुँचे थे। परीक्षा

> अपने को कभी नहीं दोहराता, यदि बह दमरी बार नमाणे के हप में । अब हम

गरिमाणगत अवयवा का त्यागत चले गा और इस प्रकार बाली केनबाम पर जा अटको मानमें ने कहा था, "डीनहाम गहले जामदी के रूप में प्रकट होता है तो उनकी क्या बात करें जो आजकल केनवाम पर मानव-आकृति की बापसी मेरी ऐसी मान्यता है कि कलाकार के मामन काई विकल्प नहीं होता. क्योंकि

असक महन क्लाकार नगातार हप क

न आयामी विकास ने एक ऐसे

दशामामी विचार को जन्म दिया

की कला में अपने माशान में इस नध्य ममझा कित् वाण्यास्य मध्यता के

गाम्बाध्य जगत में आधुनिक आदोलन एक नई गिक्न मिली, जब पिकामो और क्ली जैसे कलाकारों ने पर्व सदन में उन्होंने (१९५५-५६ में) प्रशिषण निया। इसी दौरान बिटिश सीसिल की मदद में फांस और इटली की यात्रा भी की। फिर अमेरिका, जापान, कम्पुचिया (तब कम्बोडिया) और हिन्दीमया भी गए। १९५६ से १९६७ न्यूवाक में अपनी ह दौरान १० मोको पर उन्होंने बबड प्रवर्णनियाँ लगाई और कई महत्वपुर गुरस्कार प्राप्त किए। प्रो सबसण्यत 計

१९७९ में श्री मल्लिकार्जुन मैसूर र चेम्मनगुडी श्रीनिवास अध्यर एक स रुपए का यह सम्मान अजित कर स्क्रमण्यन् को

मुक्रमण्यम्

लिंग केनवाम में नेस्तनावृद्ध कर दी गई ह या कथामुलक-आकृतिपरक धारा के खारा में केनबाम पर लौट आई है, हमें

ारोहित यह कहे कि मानव-आकृति

मानव-आकृति हुम्शा-हुम्शा क

नहीं हुए। एक ग्रीनवर्ग भने ही यह कहे

मूत्रन क्रिया बीदिक नहीं. पराद्यीदिक होती है। यदि मूजनक्रिया की म्बमावगन अभिष्यांकि कह जाती है मो गक परितक्त निरधकता के अलावा कुछ और प्राप्त नहीं होता। भारतीय कलाकारा की इस प्रदर्शनी को प्रम्नत करन हुए में यह देखता है कि अधिकाश हत्य में हमारे कलाकार पाष्ट्रचात्य जगत क कलापण्डा की मत्रणाओं के शिकार

की बात कर रहे है।

पार करते हुए, सस्मरण, गालबनो का गीत आदि। एक कहानी सग्रह और एक रचनाएँ हमी और लियुआनी में भी सात्म रचना



१९७२ में आपकी एकल प्रदर्शनी

विभाग को भी वे अपनी सेवाएँ दे चुके है तथा शासन साहित्य परिषद् के सीवब मी रह चुके हैं। इस समय आप केंद्रीय

साहित्य अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका

समकालीन भारतीय माहित्य

पद और लिखत कला अकादमी में मबद्ध रह चुके है। गुजरात विश्व गलय के पेटिन विभाग के प्रमुख भी उन्होंने कला विषयक अनेक लेख भी मध्यप्रदेश मरकार का कालिदास कार पाने बाले वे तीसरे महानुभाव

सम्पादक है।

पर फिल्में बना

और आस्ट्रिया की प्रदर्शनियों पहुँचनेवाले है।

की कृतियाँ दनिया के कई नगरों में गोभायमान है। इस्त गिल्म मडल, १० ०० में माडागिव (बस्तर) में जनमें कला (धात्-शिल्प) सीबने वाने बचेल फिल्म्स डिविजन और जीवत कवा अधिनिक कला के दायरे में महत्त्वपूर्ण मिम्मुल का नाम है, जयदेव बधन और अपने पिता से परम्मरागत घडवा अकादमी जयदेव चकी है।

भारतीय लोक कला के माध्यम मे

नमदेव बर्घल

की साओं की अन्तिभिरता की जो परिकल्पना भारत भवन के रूप में आकार ने रही है, रूपकर उसका



भारत भवन हे उदघाटन और कालिबाम एवं शिवर ममानों के अलंकरण के बाद भोपाल में आठ दिन तक माहित्य, मगीत और कलाओं की जो मरिता प्रवाहित होगी, उससे दर्शक एवं भीता अभिभूत हुए बिना नहीं रह सक्षेगे। रूपकर की स्थापी प्रदर्शनी के अलावा दीर्घा में के. जी. सबमण्यन और जयदेव बचेल की एकल प्रदर्शनियां लगेगी। विभिन्न कार्यक्रमों में उस्ताव अलाउड़ीन क्षा अकादेमी के छुः प्रकाशनों का विमोचन भी होगा।

का कार्यक्रम है। इसके बाद १५ से २१ फरवरी तक शाम को अंतरम और बहिरंग भी आबाद रहेंगे। इस दौरान मध्म १४ फरवरी की शाम श्रीमती गंगुबाई हंगल, उस्ताव निसार हुसैन हो और उस्ताव बिसमिल्ला हो के संगीत प्रवेश रंग मंडल, विभिन्न शैलियों के नाटक प्रस्तुत करेगा। १५ फरवरी को रंगमंडल का गुभारंभ पीटर कुक और गुम इन नटकों के प्रमुख निर्देशक है, ब. ब. कारत, अलखनंदन, भीमती नीलम बीधरी, अलोपी बमी इसके अलावा सीक-परम्परा के नहत जो कार्यकम होंगे, उनमें उद्दे शैली का 'बार दैन', बुन्देलकड का बरेदी नृत्य और एकपात्रीय भाण, शेख गुलाब का 'करमा', प्ताराम का पंडवानी, राम महाय पांडे का राई, ओमप्रकाश गर्मा का मानवी माच और मदनसाल का छुतीमगड़ी नाचा ग्रामिल है।

मलम चित्र रामंडल के बहुबचित प्रयोगों के हैं। एक है आदिवासी कलाकारों के बेलगूर का और दूसरा

कारंत के 'चतुर्भाणी' का।

## प्रतयक्षाकर्ष संकल्पों का रगमडल :

म के नट पर बमे हुए उमके मीद्रयं को और भी प्रव्य करने वाले भारत भवन का एक बहुत वहा हिस्सा है

बाहिए। रंग मङ्ख अनुभव करता है कि उसकी प्रतिबद्धता सिष्टे हिंदी माटको के मचन के प्रति ही नहीं, बल्कि किसी भी नाटको के माथ-माथ विशव माहित्य के भारतीय भाषा में लिसे गए महत्त्वपूर्ण महत्वपूर्ण नाटको के मचन की भी है। रमामडल एक थियेटर कपनी की

नरह नही बनना चाहता. बन्दि गह

एक पूरे परिवंश थियेटर की तरह मगता

अतरम और बहरमा। बहरम झील की और पहाहियों की दलान की तरफ है। इसम ५०० प्रेअको के लिए स्थान होगा। अतरम शब्द एक रम शाला है। इसमें एक उसरा हुआ समतान मच है भीर इसमें २५० प्रेशकों के लिए जगह होगी। इसके अलावा अभ्यास के लिए हमरा हागा और बर्नणांप के जिए भी नगह होगी। रगमङ्ज यह विध्वास हरता है कि आतीय परपराओं के माथ आधुनिक मवेदना प्रतिकत होना बाहिए। इस तरह अतीत को बर्तमान के माथ जाइकर अधिक ममुद्र भविष्य की रममङ्ग यह मानता है कि रनमन म्थानीय होनी बाहिए, लेकिन समार क इसम गहरी अतर्दीष्ट होती

इसकी दो रन शालाएँ होगी-



ब. व. कारत

का स्वरूप और उसकी प्रकृति तो

भ्रार बड़ा जा मक्गा।

अपने महत्व को समझाना बाहता है।

अपने मदस्यों के भीतर एक गहरा और ममग्र रगमंत्रीय उन्मेष स्थापित करना बाहता है। जिससे ' भक्त सदस्य अपने अलग अलग क्षेत्रों में जाकर रगमंच की स्थायी आगरूकता का प्रमार और प्रशिक्षण कर सक्।

वन्ति यह आचलिक बोलियों और देशों छि से भरे नाटकों का भी मचन करना रग मडल क्ष्म भादिरियक हिंदी के ही महत्त्व को स्वीकार नहीं करता बाहता है।

भोपाल में स्थित होने के बाबजद भी पह प्रदेश के विभिन्न इलाकों में वर्कशांप आयोजित करना चाहता है और तमाम ब्रोटे-खोटे गांवां और कम्बों तक पहुँ बना बाहता है।

रगमडल लोकप्रिय रगमच और मयोगधिमिता के बीच मीन्दर्य परक रगमडल, अभिनेता के भीतर रितहासिक वीध और विश्व रगामच के परिदृष्य की समझ विकसित करना मतलम पर विश्वास करता है।

भारत भवन के पहले नी दिनों का जा ब्रिटेन के स्प्रसिद्ध रगकर्मी पीटर ब्रुक कार्यक्रम बनाया गया है, उसके तहत अभिनेताओं का एक वर्कशाप भी होगा १६ में २० फरवरी तक भारत-भवन इसका मंबालन करेंगे।

रामकुमार

पूरा नाम पीटर स्टीफेन पांन बुक १९२५ में जन्में थे। जिल्ला बेस्ट द इनफरनन मशीन (१९४५) उनकी मिनिस्टर, ग्रेशमम्स और मेक डालेन कालिज और आक्सफोई में हुई। द हेजह आफ डांक्टर फाउस्टम (१०४२) और प्रमध् प्रस्तिया है।

फ्लाईज, टेल मी लाईच और किंग नामक एक प्रतक भी प्रकाशित कर चेह बिमधम रिपर्टरी थिएटर, लदन और पेरिस के अलावा वे अमेरिका, अफ़ीका और आस्टेलिया में भी अपने नाटक पेश कर चके है। उन्होंने बेगार्म आपेरा, मांडरेट कैण्टाबिले, लाई एड र नियर जैसी बाबत फिल्मों का निर्देशन भी किया है। बमिष्यम से डी. लिट की उपाधि में विभाषित हैं, अभिनेत्री नतागा पेरी मे विवाहित है और एम्पटी स्पेम

ममुवायों का भेद कुख-कुछ धूमिल हो गया है और विभिन्न आदिवासी

सम्दायों में हिन्द्त्व का प्रभाव पैठा हुआ है। इस अन्तर्भगाव के कारण कला मथको के संयोजन में आश्चर्यजनक

आधार है, जिनसे कलाकृतियां चुनी गई है। यह बात ध्यान में रखी गई कि ऐतिहासिक और कालगत विकास की यहाँ आदिवासी और नोक कला मध्यप्रदेश में आदिवासी तथा लोक संग्रह के चयन के पीछे काम कर रही के कलाकारों का। इन मचके माथ स्वामीजी को मिला गुलाम मोहम्मद प्रणवर्जन रे ऐसे कलाकारों का सहयोग और सबने मिल बैठकर रूपकर की बह उसे राज्य के आधीनक आदीलन क दे दी हैं। रजा और हुसेन की कितनी ही कलाकृतियाँ इसी प्रकार प्राप्त हुई। कला परिषद का अपना चयन भी है पिछले सात-आठ बरमो मे-मध्यप्रदेश योजना बनाई. जिसमें कला प्रेमी दर्शक को एक ही स्थान पर समकालीन सजनात्मक उपलब्धियाँ प्राप्त हो मके द्यिट में परिचय प्राप्त कर लेना अचित होगा। आसिर वह कीन लेख, अकबर पदमसी, ज्ञानकारी मिल मके।

अवधारणा और इन कलाकृतियो THEFT उनकी आधुनिकता चन्तिन

कला का बहुआयामी संसार

रहे हैं। प्रत्येक कलाकार अपनी कल्पना

मजेनात्मक प्रतिभा में साक्षात्कार की अनत सभावनाएँ है। स्था आपने अपने भीतर उपज मकते वाली उस द्वन्द्व की कल्पना की है जो किसी दर्शक के मन में उपज सकता है, यदि बहु कला वीधिका र किसी स्थान विशेष पर खड़े होकर

अपने समय में टकराती समृब

पुस्तकालय अनद्वद और अन्तरंग के केन्द्र में है आधुनिक लोक और आदिवासी कला का वह अप्रतिम मग्रहालय. जिमम

महत्वपुर्ण अग है। भारतीय कविता

और अजित अनभव के महारे उपलब्ध रचना द्विट में ममय का और उसको अभिव्यक्त करने वाले रूपाकारो का अकत कर रहा है। समकालीनता की इसी अवधारणा पर हपकर आधारित

शहरी, लोक व आदिवासी

नोक और आदिवासी समदायों के नोग कला-कला के लिए या केबल पथातथ्य इमिला रूपकर के निर्देशक जगदीश म्बामिनाथन लोक और आदिवामी ममदाय में जिस कला की अपेक्षा रखते दीवा रो पर बने हुए मजाबटी भित्ति चित्रों में पाई जाती है, बाहे ऐसे चित्र जादुई और धार्मिक सम्बेदनाओं में जनित हो अथवा केवल सौंदर्य बेतना से, या धातु या मिट्टी या टेराकोटा में बनी कला की धारणा में विश्वास नहीं रखते। बह उनके घरो और झोपडियो

समकालीन सर्जनात्मकता की इस

अद्वितीय परिकल्पना को रूप देना बड़ी मारी चनौती थी, लेकिन जगदीण कल्यनाशीलता और जीवट ने उसे चद

स्वामिनाथन की असाधारण एकाधता.

रुसरी और नजर घमाने पर कठथोरा मिट्टीबाई, बस्तर के वेलग्र, मंडला के आदिवासी युवक रही मजरिनों में से दो की बही उमी

विमासपुर की

तनगढ और भारत भवन में मजरी कर स्थान पर बनाई हुई कलाकतियाँ नजर आए। एक और नागजी पटेल के जिल्प

अधनातन कलाकृतियाँ दिलाई पडे और

सतीम गजराल

हत्या सन्ना.

एक और नजर धमाए तो उसे हमेन न्जा, गुलाम भेख, बेन्द्र, रामकुमार महीनों में सभव कर दिकाया है। आधिनिक कला के प्रदेशिन और सम्मान के लिए मध्यप्रदेश कला परिषद् लम्बे और कला

विनम्नता

आत्मीयता,

हो, दूसरी और बस्तर के लोक मूरिकार जयदेव बधेन के। ये मारे कलाकार

शीमवी मदी के एक ही मुकाम पर खड़े

अरसे में स्थात रही है। इसी गंभीन

मरक्षण की उसकी निस्वार्थ चिता मे प्रेरित होकर देश के प्रस्थात कलाकारो मुल्यवान

महत्वपूर्ण जिनम

अपनी

कलाकृतियाँ

भौतिक विश्वासों और आध्यात्मिक मस्कारों का दबाव झेलते हुए मुजन कर

नगत और जीवन, विज्ञान और प्रकृति

आवाम और उनके निर्देशन में कला Rewhe मानकारी दी गई है। दलों में विभक्त इन विद्यार्थी चुने गए। इन मबको भोपाल में हराई. जिसमें तहसीलवार अनमिषत माति एव अनुजातियों की मध्या, मध्य उत्मवो देवी देवताओं की अच्छी-बामी खतीमगढी, बदेली, बचेली ) के क्षेत्रों मे डोरला) की अधिकता वाने ग्रेंगों मे हरने की योजना बनाईगई।पहले चरण जनों में जाकर वहां के कलाकारों, कला रिमयो. जिभको. शामकीय मन्यानो एकत्र कर हपकर के कला संयोजन के गया। हर एक की स्वामीजी ने एक ऐसी देवी-देवताओं की मृतियों में, पुत्रा के बहाबे के रूप में, सिलीनों के रूप में अथवा मुखौटों में, जिनके द्वारा वे प्रकृति र माथ अपने मबाद स्थापित करते है। लोक कला का मग्रह मध्य रूप में हिन्दी नमाडी ममदायों (भीनी कोरक, गोडी, कुरुख, अबझमाडिया न राज्य के बीम जिले चने गए। इन आदि के महयोग में कलाकृतियाँ एकत्र हरने के जिए स्वालियर, जबलप्र तिथे कार्यन्त दृष्टि मे पनिषित कराया इन्दीर और कला के मस्थानों (म्ब-सकलित) मालबो माडिया गिस्तका ग्रीलयो

> कलाकृतियों का मूल्य तो घ्पए के मान में लाखों में है।) भारत भवन के इम

मग्रहालय को मग्रह और प्रदर्शन के लिए

कुस की बनी मृतिया, विभिन्न धातुओं के ŧ कल्यनाश्चीलता का ऐसा विराट स्थारंग बाला है। यह अचरज की बात नहीं है कि मी व्यक्ति भीतर में हिले बिना नहां रह मकता। गवण देव के विगट पत्रे, बड़ा देव का अदभन मयोजन, चमकदान स्मारक काष्ट्र यनंत्र, मिट्टी के जिलीने. उनको एक साथ एक जगह देखकर कोई ममुहों ने जो कलाकृतियाँ इकट्टी की है माझान्कार है जो चमन्कृत कर अभि वाला छुरहरा गेर. मानवाकार

अमृतितत्व और मृत विधान दोनों ही वस्मयकारी लगे। असभव नहीं कि यान नीक अवधारणा के द्वेड में ऐसी विश्वकला या मृतिकला या स्थापन्य हे मुजन का जितिज ब्ले. जो उसी नरह मजराहो की मानवाकृतिया या इस ठठ भारतीय हो. नैसे कागड़े की कलम अल्मोडे की कलम. मद्रै का मृतिशिल्य. नोक आदिवासी कलाकारो का मजन।

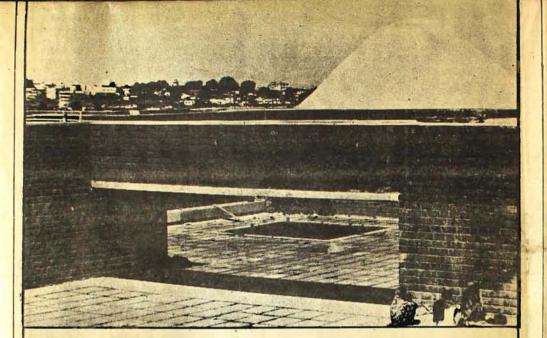
चनो की प्रतिकृतियां भी जारी की (०० मे अपर कलाकृतिया देखते को मध्यप्रदेश के बार वित्रक्तारी-सर्वधा हो ने मोगी एन एम नाजपत विच्ला चिचालकर और राम मनाहर मिन्हा क ब्रह्मी में हमें ६३ नागर कलाकारों की १६० कलाजनियों और मध्यप्रदेश के आकर। उनके पहुर बस्तर में आए हो बैसे कृष्ण बन्ना ठइरते होंगे या अक्षवर नरमणे या कठथीरा की मिटीबाई या बस्तर के बेलकर की देते है। इसी अपनापे के बने रूपकर की उद्घाटन मब्त मुझे मिला एक रोज उनके घर क्लाकार उसी महत्रता में ठहरे हुए थे. जिस आत्मीयता और गहरे विश्वास के साथ प्रतिष्टित बान-माने ग्रीपम्य कलाकारो में मिलने मेटते है, वही आत्मीयता और विश्वास व निमाड के मार्गिनमंडिने बाले यमन शिवर आयोजित करने की भी योजना है। इन जिवियों में स्थानीय कलाकारो को न केवल हपकर में मकलित ममस्त कलाकृतियों में माधान का. बन्कि इन पंशामभव उनमें कृछ् मीमने, बात करने आदि के दुर्लभ अवसर भी मिलेंगे। एक बार स्वामीजी में बात करने मैंने पड़ा कि स्या इस तरह के शिविनों में किसी नोक या आदिवासी कताकार को भी आमित्रत किया जाएगा। उन्होंने कहा अरूर। उन्हें हम बहा प्रतिया. सम्मान क्लाकारों को काम करते देखते नोक एव आदिवासी कनाकारो मिलेगी। उदघाटन के अवसर कलाकार को दिए जाते है। और अवसर से भ पदममी। म्बामीजी

THE THE

आधानक कलाकारों के एक दल ने अब

परिवर्तन हुए है। यह भी माना गया कि

कपकर म प्रस्यात कलाकारो क



### भारत

मध्यप्रदेश में कलाओं के लिए एक नया घर उद्यादन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरां गांधी 13 करवरी, 1982

रुपंकर: लिलत कला संग्रहालय मध्यप्रदेश रंगमंडल: एक नयी रिपर्टरी वागर्थ: भारतीय कविता पुस्तकालय अमहद: शास्त्रीय लोक संगीत संग्रहालय

पहले मी दिन ।

समकालीन भारतीय कला, मध्यपदेश की आदिवासी और लोक कला की दो बड़ी प्रदर्श निया, के. जी. सुष्रमण्यम् जयदेव बवेल की प्रदर्श नियां

बंगला, असमिया, मणिपुरी और उड़िया के कवियों वारा काट्यपाठ

रंगमंडल दारा पांच नये नाटक और लोक नाट्य शैलियों में प्रदर्शन, भी पीटर मूळ दारा अभिनेताओं की वर्कशाय

तीम बुजुर्ग संगीतकारों की सभा

मध्यप्रदेश के संगीत, मृत्य और साहित्य पर मी पुस्तकों, मध्यप्रदेश के चार विश्वकारों की रंगीन प्रतिकृतियों का प्रकाशन

मध्यप्रदेश शासन का उपक्रम

#### NEW Y

#### मध्यप्रदेश में कलाओं का एक नया घर

रूपंतर कलाओं, रंगकर्म, कविता, शास्त्रीय और लोक संगीत और आदिवासी लोक कलाओं से संबद्ध राष्ट्रीय महत्व की अनेक प्रवर्तक संस्थाओं को एक स्थान पर लाने की दृष्टि से मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में भारत-भवन का निर्माण किया गया है। भारत-भवन न केवल मध्यप्रदेश में वरन संभवतः पूरे देश में एक अदिवीय सांस्कृतिक परिसर होगा।

भोपाल के बड़े तालाब के किलारे की ऊंची चट्टानों पर स्थित होने से कम ऊंचाई का यह भवन दूर से गुफाओं की सी उपस्थित का आभास देता है। भारत-भवन का निर्माण औपचारिक रूप से वर्ष १९७४ में प्रारंभ हुआ किन्तु वास्तविक वार्य तो पिछले दो वर्षों में हो संपन्न हुआ। इसके निर्माण पर लगमग १२०.०० लाख रुपये क्या होने का अनुमान है। भवन का डिजाइन देश के प्रक्यात वस्त्विद वस्यई के श्री वार्सकोरिया ने किया है।

इस भवन में स्थायी संग्रहालय कलादीयाँ, कलाकार आवास, कविता पुस्तकालय, संगीत संग्रहालय, एक वंद रंग माला, एक खुली रंगमाला, दो तपस्य कक्ष, एक अभ्यास कक्ष, एक रंग कर्ममाला, एक लितत कला कर्ममाला, प्रमासन कक्ष के अलावा भंडार, फब्वारे, अनलोडिंग प्लेटफार्म और विज्ञाल खुले प्रवेश स्थल भी बनाये गये हैं। भवन का प्लिय एरिया १,३०० वर्ग मीटर है।

प्रवेश स्थल पर दोनों और भवन की छतों पर मनोरम बगोचे होंगे जहां दर्शकों को घूमने और बैठने की सुविधा रहेगी। भवन की बास्तुकला में ईल प्रणाली की छत बैफल स्लेब विशिष्ट है। इस प्रकार की छतां का निर्माण ऊंची इंजीनियरिंग कुशलता से ही संभव है। शैल का निर्माण बहुत दुक्तर कार्य है। इसी प्रकार बैफल स्लेब से बढ़े बड़े कहा बनाये गये हैं। रगशाला में प्री-स्ट्रेस्ड प्रणाली बी बीम डाली गई है जिसमें विशेष प्रकार की हाई ट्रेस्साइड इस्पात का प्रयोग किया गया है। भवन की दीवारें पत्थर की है जितकी चुनाई अत्यंत कुशलतापुर्वक विशेष कारीगरीं द्वारा की गई है। बड़े बड़े कक्षों में कुछ रोशन-दानों के माध्यम से रोशनी और हवा का सुनिश्च्य किया गया है। छतों पर बगीचे होने से विशेष प्रकार का वाटर प्रक्रिंग होटनेंट किया गया है।

विजली की पूर्ति के लिए ५०० के. ब्ही. ए. का एक सब स्टेशन बनाया गया है जिससे निरंतर विजली मिलती रहे। भवन में विजली की फिटिंग इस प्रकार की गई है कि आवश्यकता के अनुसार कहीं भी विजली की लाइन का उपयोग किसी मी स्थान या प्रदर्श विशेष पर रोशनी केन्द्रित करने लिए किया जा सकता है। दीवारों पर कलाकृतियों के प्रदर्शन के लिए विशेष प्रकार के टेफ्स और फिटिंग्स लगाये गये हैं। दोनों रंगशालाओं में आवाज और रोशनी के लिए आधुनिक उपकरण की व्यवस्था की जा रही है।

इस भवन के निर्माण में २ लाख ५० हजार घनफीट चट्टानों को काटना पड़ा, एक लाख ५० हजार सीमेन्ट की वीनियां और ५१० टन हस्पात प्रयोग में लाया गया । छत में ५०१० वेफल लगाये गये। पत्यरी की गढ़ाई और मुनाई में विशेष रूप से ६० जुशन कारीगरों ने ३ वर्षों तक अनवरत कार्य किया लगभग २०० मजदूर भी इसी अवधि में निरंतर कार्यरत रहे।

योजना के अनुसार भारत-भवन में नीचे विये गये माग होंगे:-

(क) क्पंकर-यह लितत कलाओं का संग्रहालय होगा। इसमें पूरे देश मर से न केवल आधुनिक कला बल्कि आदिवासी और लोक कला की कृतियां भी सिम्मलित की जाँवेंगी। श्री जे. स्वामीनाधन इसके निर्देशक हैं और एक सलाहकार मंडल इसकी गतिविधियों के संचालन के लिए बनाया गया है। श्री मकबूल फिटा हुसेंग, श्री रामकुमार, श्री अकबर पद्मश्री, श्री कृष्ण खन्ना, श्री गुलाम मोहम्मद शेव, श्री प्रणव रंजन रे इससे शामिल हैं। कला के विद्याधियों और विशेषकों हारा मध्यप्रदेश के २० लिलों से आदिवासी और लोक कला कृतियों ने संग्रह का एक वृहद आयोजन इस बींच सफललापुर्वेक किया गया था। येश से अनेक वीर्षस्य कलाकारों ने अपनी कला-

कृतियां रियायती मृत्य पर संग्रहालय को प्रदान की है। इनमें से अनेका महत्वपूर्ण कलाकृतियां लम्बे समय तक के लिए प्रदान की गयी है।

- बागर्व-यह १४ भारतीय भाषाओं की कविता का पुस्तकालय होगा। किवता पुस्तकों के अलावा इसमें देश भर के किया के वित्र दस्तावेज, किवताओं के पोस्टमं और रिकार्डस भी इसमें शामिल किये जायेंगे। अनेक शीर्षस्य कवियों और आलोचकों का एक सलाहकार मंडल बनाया गया है। डा. यू. आर. अन्नयमूर्ति (कन्नड़), डा. केदारनाय सिंह (हिन्दी), श्री अली सरदार जाफरी (उर्दू), डा. हिरेन गोहाई (असिमया), डा. अय्यपा पनिकर (मल्यालम), श्री जी. एम. शेख (गुजराती), डा. अर्यपा पनिकर (मल्यालम), श्री जी. एम. शेख (गुजराती), डा. अर्यपा पनिकर (मल्यालम), श्री सुभाष मुखोपाध्याय (बंगाली), श्री सीताकंरात महापात्र (उड़िया), श्री दिलीप चित्रे (मराठी) आदि इसके सदस्य है।
- (ग) अनह्रव-णास्त्रीय और लोक संगीत संग्रहालय । इसमें देश भर के महत्वपूर्ण गास्त्रीय और लोक संगीतज्ञों से संविधित सामयो के अलावा रिकाडेंस् और टेप्स का संग्रह होगा । महत्यप्रदेश कला परिषद् के पास शास्त्रीय और लोक संगीत की रिकाडिंग का जो महत्वपूर्ण संग्रह है, वह इसमें शामिल किया जावेगा ।
- (घ) अंतरंग और बहिरंग-रंगशीर्थ मध्यप्रदेश रंग मंडल के निदेशक श्री व. व. कारंत हैं। एक प्रेक्षागृह (अंतरंग) और एक खुला रंगमंच (बहिरंग)इसमें गामिल हैं। इसमें भारतीय रंगमंच से संबद्ध एक संग्रहालय भी होगा। वो नैपन्य गालाओं के साथ-साथ एक बढ़ा रिहर्सलक्स और एक कंग्रेगाला भी इससे संबंधित होगी।
- (ङ) लिलत-यह लिलत कलाओं का पुस्तकालय और अभिलेखानार होगा। इसमें पुस्तकों और प्रकाशनों के अलावा लिलत कलाओं से संबद्ध पत्राचार और दस्तावेज और अन्य सामग्री भी संग्रहित की जावेगी।
- (च) आकार-इसमें प्राफिक्स मूर्तिशिल्प, चित्रकला और मृत्तिकाशिल्प से संबद्ध एक कर्मशाला होगी। । मध्यप्रदेश के कलाकार और विद्यायियों को यहां प्रशिक्षित किया जावेगा ।
- (छ) आश्रम—यह कलाकार का सृजन आवास होगा । योजना यह है कि प्रत्येक वर्ष एक शी पंस्थ संगीतज्ञ, एक रंगकर्मी को एक फिल्म निर्माता और एक कलाकार को यहाँ एक या दो महीने के लिए निर्मातत किया जायेगा । उसके बारे में यहां सारी सामग्री एकत्र की जायेगी और उसे अपनी इच्छानुसार सृजनकर्म करने के लिए सुविधाएं प्रदान की जायेंगी ।

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी १३ फरवरी, १९८२ की संध्या को भारत-भवन का उद्घाटन करेंगी। भवन के मुभारम्भ के अवसर पर कलाओं और कविताओं का एक सप्ताह पर्यन्त उत्सव का आयोजन किया गया है। "रूपंकर" एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन करेगा और एक महत्वपूर्ण केटलाग का प्रकाशन भी किया जायगा। पूर्वी अंचल अर्थात् बंगाली, असमिया, उड़िया और मणिपुरी के चुने हुए कवियों का काव्यपाठ होगा, जिसमें मूल काव्यपाठ के साथ ही साथ हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किया जायेगा। अनेक शीर्षस्य शास्त्रीय संगीतकारों का एक रात्रि पर्यन्त अधिवेशन होगा। कालिदास सम्मान १९८१-८२ भी इस अवसर पर प्रदान किया जायेगा। प्रसंगवश इस वर्ष का कालिदास सम्मान रूपंकर कलाओं के लिए दिया गया है। रंग मंडल इस अवसर पर हिन्दी उर्द संस्कृत और पोलिश भाषाओं में लिखे गये मूल नाटकों की प्रस्तुतियों की शृंखला शुरू करेगा। वागर्थ १४ भारतीय भाषाओं की एक-एक कविता का मूल और उसका हिन्दी अनवाद प्रस्तुत करते हुए पोस्ट कार्ड जारी करेगा और कविता पोस्टरों की एक प्रृंखला गुरू की जाएगी। मध्यप्रदेश कला परिषद के आलोचना द्वैमासिक पूर्वप्रह का आधुनिक भारतीय कला पर केन्द्रित एक विशेषांक भी इस अवसर पर प्रकाशित होगा।